13/6/64 रात्रि का क्लास :– यह है ज्ञान सूर्य, ज्ञान चंद्रमा और लकी स्टार की दरबार। इसमें ज्ञान सूर्य तो शिवबाबा को कहेंगे, ज्ञान चंद्रमा है यह बड़ी माँ, बाकी सब लकी स्टार्स हैं। इसमें मम्मा है मुख्य लकी स्टार। वह चंद्रमा, स्टार्स तो दिन से रात करते हैं और यह स्टार्स रात से दिन कर देते, घोर अंधियारे से घोर सोझरा कर देते, जो आधा कल्प चलता है। चिल्ड्रेन्स लकी होते हैं, जैसे लौकिक बाप के घर की शोभा हैं। तुम बच्चे भी घर की शोभा हो। यह तो सभी मानेंगे कि हम प्रजापिता ब्रह्मा के औलाद हैं। ब्रह्मा फिर शिवबाबा का एक ही बच्चा है। गोया सभी मनुष्य मात्र डाडे के वर्से के हकदार हैं। तो सबको मुक्तिधाम, डाडे के घर ले चलते हैं, फिर जो पढ़ते हैं उस अनुसार जीवनमुक्ति मिलती। तो बच्चों को कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए; परन्तु माया भुलाए देती है। अंत में खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। है तो बड़ा सहज। शिव को बाप कहते हैं तो ज़रूर उनके हम बच्चे हैं। तुम पांडवों का यह किला है। वह है कौरवों का किला। वह शोक वाटिका में बैठे हैं, तुम अशोक वाटिका में बैठे हो। 21 जन्मों की खुशी तुमको इस समय है। तुमको तो कभी कोई शोक न होना चाहिए। कन्या की जब शादी होती है तो अंदर में खुशी का पारा चढ़ जाता है। तो तुम बच्चों को व सजनियों को अपार खुशी होनी चाहिए। तुम अभी नॉलेजफुल हो, देवताएँ तो बुद्धू हैं। यह ज्ञान परम्परा नहीं चलता। अच्छा, बच्चों से गुडनाइट।